AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 04 | Issue 04 | April 2023 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 34-36

मध्यप्रांत में जनजातीय समाज सुधारक-राजमोहिनी देवी

डॉ.अवधेश्वरी भगत
सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
श्री रावतपुरा सरकार युनिवर्सिटी रायपुर (छ.ग.)

अतीत से ही सामाजिक सुधार के जन आंदोलनों में संत महात्माओं की अह्म भूमिका रही है। समाज सुधार सदियों से होता आया है, जिसका परिणाम आज का सभ्य समाज है तथापि समाज में विसंगतियां व बुराईयों का होना भी अवश्यंभावी है। ऐसे में जब सरगुजा के आदिवासी समाज में अशिक्षा, मद्यपान और अंधविश्वास गढ़ कर चुकी थी। यह यहां के सामाजिक जागृति व चेतना के लिए ''रजमन बाई'' का आगमन हुआ बाद में इन्हें ''राजमोहिनी देवी''[1] के नाम से जाना जाने लगा।

राजमोहिनी देवी का जन्म सरगुजा के प्रतापपुर (वर्तमान में सूरजपुर जिले में) के शारदापुर ग्राम में जुलाई सन् 1914 ई. हुआ था। इनके पिता का नाम वीरसाय था जो एक गोंड़ आदिवासी कृषक थे तथा इनकी माता का नाम शीतला था।[2]

राजमोहिनी देवी बचपन से ही अपने जीवनकाल में विपरीत परिस्थितियों का सामना किया। कम उम्र में ही उनका विवाह कर दिया गया था, विवाह के छः महिने बाद स्वास्थ्य खराब होने के कारण उन्हें अपने माता-पिता के पास आना पड़ा। पांच वर्षो के लम्बे उपचार के कारण पति ने उन्हें छोड़ दिया। परिणाम स्वरूप उनका दूसरा विवाह 15 वर्ष की आयु में वाड्रफनगर में स्थित ग्राम गोविन्दपुर के रंजीत सिंह से हुआ। परिवार अधिक सम्पन्न नहीं था।[3]

राजमोहिनी देवी के 4 पुत्रियां और 4 पुत्र हुए परन्तु संतान सुख भी इन्हें अधक दिनों तक नहीं मिल पाया। एक के बाद एक संतानों की मृत्यु होने लगी। पहले पुत्र लखमन की 12 वर्ष में और दूसरी संतान घासी की विवाह के बाद मृत्यु हो गई। तीसरी पुत्री निराशा का विवाह रूपचंद से हुआ परन्तु कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई । चैथी संतान बलदेव की मृत्यु 1996 में हो गई। छठी संतान मनुदेव की मृत्यु सन् 2005 सड़क दुघटना में हो गई। संतान की मृत्यु जन्म के बाद हो गई। सिर्फ पांचवी संतान ''रामबाई'' जीवित है जो राजमोहिनी देवी के आश्रम की साफ-सफाई एवं पजा अर्चना करती है। राजामेहिनी देवी के जीवन में यह दुःख सहन करना और पति का शराबी होना, इन्हीं कारणों से वजह से उनके जीवन में भी परिवर्तन आया जो सहायक रहा।[4]

उनकी वेशभूषा अत्यंत साधारण थी। सफेद रंग की हरे या नीले किनारे की सूती साड़ी पहनती थी। राजमोहिनी देवी बहुत ही साधारण जीवन जीतीं थीं। उन्होंने जीवन पर्यंत दूर-दूर गांवों में पैदल घूमकर आदिवासियों को संगठित किया

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Awadheshwari Bhagat Assistant Professor, Dept. of History Shri. Rawatpura Sarkar University, Chattisgarh, India. Email: awadhibhagat@gmail.com	

और उन्हें गांधीवादी आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दी। उनहें अक्षर ज्ञान नहीं था किन्तु व्यवहारिक ज्ञान ने उन्हें समाज नेता के उच्च शासन पर प्रतिष्ठित कर दिया।

प्रतिदिन 10-15 कि.मी. की पदयात्रा के बाद रात्रि विश्राम होता था। अनुयायी अपने साथ खाने-पीने का सामान लेकर ग्रामीण अंचल में पैदल ही जनजागरण एवं सेवा कार्य हेतु निकल पड़ते थे।

1951 में अकाल के समय गांधीवादी विचारधाराओं व आदर्शों से प्रभावित होकर इन्होंने एक जनआंदोलन चलाया जिसे राजमोहिनी आंदोलन के नाम से जाना है। राजमोहिनी देवी के पद यात्राओं के मुख्य उद्देश्य -

1. सरगुजा की जनजातियों में गांधी दर्शन का प्रचार-प्रसार एवं उनको राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना।
2. अंधविश्वास के विरूद्ध जनसभाओं द्वारा लोगों को आगोह करना।
3. रूढियों, अर्थहीन रीति रिवाजों के बंधन से जनजातीय समाज को मुक्त करना।
4. स्वालंबन द्वारा उन्हें मनोयोगी बनाना।
5. स्वच्छता और सफाई पर विशेष बल।
6. शोषण के विरूद्ध एवं नारी जागरण के समर्थन में आवाज उठाना।

राजमोहिनी देवी गांधी जी के विचारों से बहुत प्रभवित थी। उन्होंने गांधीवादी संदेश लोगों तक पहुंचाया। ''जीव हिंसा मत करो, मद्यपान छोड़ दो, मांस खाना छोड़ दो, सत्य के मार्ग पर चलों, यही जीवन का सार है। राजमोहिनी देवी ने खादी का प्रचार, गौ-हत्या पर रोक जैसे लोक हितकारी कार्यों को सफल बनाने में भरपूर कोशिश की। गांधी जी ''रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम'' गाते थे, ... अब राजमोहिनी देवी और उनके सहयोगियों द्वारा भी किया जाने लगा।[5]

राजमोहिनी देवी आचार्य विनोबा भावे एवं गांधी जी को अपने गुरू रूप में स्वीकार कर उनके आदर्शों को आगे बढ़ाया।[6] विनोबाजी के भूदान आंदोलन का उद्देश्य समाज में समानता, मातृत्व और स्वराज स्थापित करने का रहा है। आंदोलन का प्रभाव अनेक प्रांतों में पड़ा, सरगुजा पर भी इसका प्रभाव पड़ा, राजमोहिनी देवी ने इस कार्य को गति देने का भार संभाला। सन् 1955 से सन् 1959 तक भू-दान आंदोलन में लम्बी पद यात्राएं, करके सैकड़ों एकड़ भूमि दान में प्राप्त की।[7]

15 नवम्बर सन् 1968 को सरगुजा में विनोबा भावे जी का आगमन हुआ और उन्हें राजपुर में वाड्रफनगर और सीतापुर दो प्रखण्ड दान भेंट किए गए। विनोबा भावे जी सरगवां गांव भी गए जहां राजमोहिनी देवी और उनके साथियों को अम्बिकापुर, बतौली, मैनपाट, धौरपुर, राजपुर, शंकरगढ़ और बलरामपुर में 101 नए ग्राम दान में मिले। 17 फरवरी सन् 1969 तक उदयपुर भी ग्रामदान में आ गया।[8]

राजमोहिनी देवी ने अपनी लम्बी-लम्बी पदयात्राओं द्वारा लोगों को अपने विचारों से अवगत कराया। 19 अप्रैल सन् 1975 को मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुल्क का अम्बिकापुर आगमन हुआ। मुख्यमंत्री के विश्रामगृह से राघवपुरी आश्रम तक पदयात्रा आयोजत की गयी, उस समय राजमोहिनी देवी भी हजारों अनुयायियों के साथ पद यात्रा में शामिल हुई और स्टेडियम ग्राउण्ड (अम्बिकापुर) में मुख्यमंत्री की आम सभा में उन्होंने जनता को संबोधित किया। आजादी के बाद आदिवासियों को प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का सिलसिला शुरू हो गया था। राजमोहिनी देवी द्वारा धर्म परिवर्तन को रोकने का भी एक महत्वपूर्ण प्रयास किया गया।[9]

माता राजमोहिनी देवी पढ़ी-लिखी नहीं थी, किन्तु शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा जीवन लगा दिया। बापू

धर्मसभा के माध्यम से गोविन्दपुर में एक स्कूल भी आरंभ कराया, जिसे वर्तमान में सर्वोदय समिति संचालित करती है। बापू धर्मसभा संस्था के माध्यम से सूरजपुर जिला अंतर्गत वर्तमान में चार स्कूल संचालित है और जय बड़ा देव समिति राजमोहिनी देवी के नाम से तीन स्कूल संचालित कर रही है। सूख भूखमरी और अकाल जैसे आपदाओं से निपटने के लिए माता जी ग्राम अन्नकोष की स्थापना की थी। राजमोहिनी देवी को आदिवासी समाज की समर्पित सेवा के लिए मध्यप्रदेश शासन ने ''इंदिरा गांधी राष्ट्रीय समाज सेवा पुरूस्कार'' से सन् 1985-86 ई में सम्मानित किया। इसके बाद इन्हें ग्रामीण वर्ग के उत्थान के लिए विशिष्ट कार्य के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन द्वारा ''पद्मश्री'' से सम्मानित किया गया।[10]

6 जनवरी सन् 1994 को इस महान विभूति का स्वर्गवास हो गया। आज वह हमारे बीच नहीं है। लेकिन उनका एक-एक संदेश राष्ट्र और समाज को निरंतर रचना कार्यों का संदेश अवश्य दे रहा है। सरगुजा में आदिवासियों के लिए किये गये सामाजिक कार्यों और उनकी उपलब्धियों को याद करते हुए छत्तीसगढ़ शासन ने उनके नाम पर शासकीय कन्या महाविद्यालय अम्बिकापुर का नाम राजमोहिनी देवी शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर रखने का निर्णय किया।

पद्मश्री माता राजमोहिनी देवी द्वारा नशा बंदी के लिए भट्टी तोड़ों, सत्याग्रह और आचार्य विनोबा भावे द्वारा चलाये भू-दान महायज्ञ को सरगुजांचल सहित आस-पास राज्य में चलायी थी। वे पैदल चलकर सरगुजांचल में कई एकड़ भूमि दान में पायी थी। माता राजमोहिनी देवी गो हत्या बंदी आंदोलन, ग्रामदान, भूदान अभियान, नगराही मानवीय कर का विरोधी आंदोलन चलाया। उन्होंने बताया कि समर्पित सेवा भावना के इतिहास में माता राजमोहिनी देवी ने अपने निःस्वार्थ योगदान से एक नया गरिमामय अध्याय जोड़ा। उनका स्मरण समाज सेवा के क्षेत्र में एक निष्ठावान समाज सेविा के रूप में बड़े आदर और स्नेह से लिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. मंदिलवार, सचिव, सरगुजा-दर्शन (ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य) मनरम् प्रकाशन, अम्बिकापुर, श्री संवत् 2060, पृ.-10
2. जिंदल, सीमा सुधीर, सामाजिक क्रांति की अग्रदूत राजमोहिनी देवी, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 2013, पृ.-10
3. जिंदल, सीमा सुधीर, उपरोक्त, पं.-11
4. मंदिलवार, डॉ. सचिन, स्वातंत्रयोत्तर छत्तीसगढ़, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग (छ.ग.), 2004, पृ.-68
5. भूषण, केयूर, छत्तीसगढ़ के नारी राम, जनचेतना प्रकाशन, रायपुर, 2005, पृ.-53
6. सिंह, चन्द्रप्रताप, प्रगति सरगुजा, सिद्धार्थ प्रकाशन, अम्बिकापुर, 2003, पृ.-98
7. जिंदल, सीमा सुधीर, पूर्वोक्त, पृ.-56
8. जिंदल, सीमा, सुधीर, उपरोक्त, पृ.-57
9. वर्मा, परदेशीराम, सितारों का छत्तीसगढ़, वैभव प्रकाशन, रायपुर, 2011, पृ.-200
10. मंदिरार, सचिन, सरगुजा दर्शन, पूर्वोक्त, 250
11. सिन्हा, डॉ. ज्योति, प्राचार्य-राजमोहिनी देवी शास. कन्या. स्ना. महा. अम्बिकापुर (द्वारा साक्षात्कार) 25.07.2017

■ ■ ■